साप्ताहिक पत्र अंग्रेजी 'ब्लीट्ज' का प्रलाप :

क्या वैदिक भारतीय अतिथियोंका गोमांससे आतिथ्य सत्कार करते थे?

(लेखक— श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा)

श्री आर. के. करंजियाके सम्पादकत्वमें अंग्रेजीमें साप्ताहिक 'ब्लीट्ज' बम्बई— १, ब्लीट्ज पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, पटेल हाउस, १७/१७ एच्. कावसजी पटेल स्ट्रीटसे प्रकाशित होता है। इसके दिसम्बर १०, शनिवार १९६६ के पृष्ठ १४ पर एक अत्यन्त आपत्तिजनक लेख प्रकाशित हुआ है। उसके लेखक मेरठके कोई डा. डी. एन. शास्त्री हैं। आपने आंग्ल भाषामें लिखा है—

" VEDIC INDIANS SERVED BEEF TO HONOURED GUESTS."

Students of Vedas know that Aryans of the Rigvedic age were not only meat-eaters but had a special liking for beef. When, however, they realized the economic value of the cow, they put a ban on cow slaughter and called the cow as 'aghnya' (not to be killed). That word itself shows that the cow was formerly killed. It is interesting to know that cow was especially slaughtered for serving beef to guests in the Vedic age. One of the words for guests in Sanskrit is 'goghna'.

Its derivative meaning has been explained by Panini himself as 'One for whom a cow is killed'. (III. IV. 73)

गाः हन्यन्ते यस्मै स गोघ्नः अतिथिः
दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने

The practice of serving guests beef continued even when cow slaughter was banned. We find evidence of this in Uttar-Ramacharit, an 8th century drama by Bhavabhuti.

Two students of the hermitage of Valmiki are talking. One tells the other of the arrival of a distinguished guest, Vasishtha, at the hermitage. The other student, obviously of a jovial nature, remarks that he thought some wolf had come to the hermitage because as soon as that distingushed guest arrived, a female calf was slaughtered.'

—Dr. D. N. Shstri, Meerut.

अर्थात्— वेदोंके छात्र जानते हैं कि वैदिककालमें आर्य लोग केवल मांस भक्षक ही नहीं थे, बल्कि गोमांसको विशेष रूपसे पसन्द करते थे। 'तौभी जब गायका आर्थिक मूल्यांकन किया, उन्होंने गौहत्यापर प्रतिबन्ध लगा दिया और गायको, 'अघ्न्या' (नहीं मारना चाहिए) कहने लगे। वह शब्द स्वयं प्रदर्शित करता है कि गाय पहिले मारी जाती थी। यह जानना रोचक है कि वैदिककालमें अतिथियोंको

गोमांस परोसनेके लिए विशेष रूपसे गौहत्या की जाती थी। संस्कृतमें अतिथियोंके लिए शब्द 'गोघ्न' है। इसका यौगिक अर्थ पाणिनि द्वारा स्वयं ही समझाया गया है। जैसे 'जिसके लिए गाय मारी जाती है।'

(दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने सूत्रसे जिसके लिए गौ मारी जाती है तब वह गोघ्न ३।४।७३) जब. गोहत्या पर प्रतिबन्ध था तब भी गोमांससे आतिथ्य सत्कारका प्रयोग प्रचलित था। इसकी साक्षी हम 'उत्तररामचरित' भवभूति कृत (८ वीं शताब्दीका) नाटकमें पाते हैं।

वाल्मीकिके कुटीरके दो छात्र बातचीत कर रहे हैं। एक दूसरेसे कुटीर पर प्रसिद्ध अतिथि वसिष्ठके आगमनकी बात करता है। दूसरे छात्रने, जो स्पष्ट रूपसे हंसमुख प्रकृतिका था, लक्ष्य करके सोचा कि कुटीर पर कोई भेडिया आया था, क्योंकि जैसे ही वह प्रसिद्ध अतिथि आया, एक बछियाकी हत्या की गई थी।

समीक्षा— आजकल भारतवर्ष भरमें गोरक्षा महाभियान चल रहा है और आर्य जनता यह चाहती है कि गौवधका कलंक भारतवर्षसे सदाके लिए बन्द हो जाना चाहिए। इस पर वैधानिक प्रतिबन्ध लगानेके लिए लोग सत्याग्रह करके बन्दीगृहमें जाते हैं। पुरीके मान्य श्री शंकराचार्यजी महाराज, श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, तथा महात्मा रामचन्द्र शर्मा, वीर, भूख हडताल कर रहे हैं। सरकार अभी कोई कार्यवाही नहीं कर रही है। ऐसे समय पर कम्यूनिस्ट विचारधाराके वामपक्षी लोग सरकारकी दृष्टिमें अच्छे समझे जानेके लिए गोरक्षाके विरुद्धमें ऊटपटांग वक्तव्य देकर साधारण जनताको पथभ्रष्ट कर रहे हैं। शृंगेरी मठके श्री शंकराचार्य व श्री एम० एन० गोविन्दन नायर, दक्षिणपन्थी कम्यूनिस्टने इसी प्रकार ऊटपटांग वक्तव्य दिया था जिसकी तीव्र आलोचना महात्मा करपात्रीजी महाराजने तथा अन्यान्य विद्वानोंने की है। इसी प्रकार श्री डी. एन. शास्त्रीका वक्तव्य भी भ्रमपूर्ण है। आपने अपना पूरा नाम भी प्रकट नहीं किया। ईसाइयोंके समान डी. एन. नाम लिख दिया। भारतीय संस्कृतिमें इस प्रकार नाम रखना भी अनुचित है। जब आप स्वयं स्वीकार करते हैं कि गायके लिए वेदोंमें, अघ्न्या, शब्द है जिसका अर्थ गौको नहीं मारना चाहिए है, तो आपका लेख, वदतो व्याघात, के अनुसार अशुद्ध हो गया। आपने स्वयं अपने लेखका खंडन कर दिया है। यदि किसी ग्रन्थमें यह पाया जावे कि ब्राह्मण, माता पिताकी हत्या नहीं करनी चाहिए तो क्या इसका तात्पर्य यह होगा कि पहिले इनकी हत्या होती थी। वेद तो आदि सृष्टिमें मानव कल्याणके लिए ईश्वरीय ज्ञान है। वेदोंमें गायको मारनेके लिए कहीं भी कोई मंत्र नहीं है। मैं आपको चुनाती देता हूं कि कोई मंत्र प्रस्तुत करें। वेदोंमें तो स्पष्ट रूपसे गौवधका निषेध है—

"गां मा हिंसीः" (यजु० १३।४३)— गौकी हिंसा मत कर।

"अन्तकाय गोघातकम्" (यजु० ३०।१८)— गौके वध करनेवालेको मृत्यु दंड दें।

"उत्सं मा हिंसीः" (यजु० १३।४६) (उत्सं) बैलकी (मा) मत (हिंसी) हिंसा कर।

इस प्रमाणके रहते हुए शृंगेरी मठके श्रीशंकराचार्यजीने कैसे बैलको मारनेका विधान किया ?

"इमं मा हिंसीर्द्विपादं पशुम्" (यजु० १३।४६) —(इमम्) इस (द्विपादम्) दो पांववाले मनुष्य और पक्षियोंकी तथा (पशुम्) किसी भी पशुकी (मा) मत (हिंसीः) हिंसा कर।

'अघ्न्या' शब्द ऋग्वेदमें २०, यजुर्वेदमें ५, सामवेदमें २ और अथर्व वेदमें ३३ स्थलों पर आया है।

आपकी दृष्टिमें गौ पहिले मारी जाती थी तो वह आर्योंके लिए नहीं वरन् राक्षस, पिशाच लोग खाते होंगे।

किसी भी प्रकारके मांस भक्षणका निषेध वेदोंमें है।

'गोघ्न' का वास्तविक अर्थ— गौ आर्य परिवारकी लक्ष्मी है। गृहस्वामिनी भोजनके समय प्रथम ग्रास उसके लिए निकालती है। मांगलिक अवसरों पर सम्मानित अतिथिकी भांति गौको माला पहनाकर सत्कार किया जाता है।

गोघ्नका अर्थ 'जिसके लिए गाय मारी जाती है' भ्रमपूर्ण है। आपने अष्टाध्यायीके सूत्रका अर्थ भी अशुद्ध किया है।

"दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने" (अष्टाध्यायी ३।४।७३) का अर्थ ज्वालापुर महाविद्यालयके आचार्य परम वैय्याकरण पं० गंगादत्तजी शास्त्री [स्वामी शुद्धबोध तीर्थजी] ने अपने 'अष्टाध्यायी भाष्य' में लिखा है— 'गा हन्यन्ते (दीयन्ते)

यस्मै स गोघ्न ऋत्विगादि ' — वह ऋत्विक् आदि गोघ्न कहे जाते हैं जिनको गाय प्रदान की जाती है ।

पं ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासुकृत भाष्य— दाश गोघ्नौ ११२। सम्प्रदाने ७।१। सं०— दाशश्च गोघ्नश्च दाशगोघ्नौ, इतरेतरद्वन्द्वः ।

अर्थ— दाश, गोघ्न इति कृदन्तौ शब्दौ सम्प्रदाने कारके निपात्येते । कृत्संज्ञकत्वात् कर्तरि प्राप्ते सम्प्रदाने निपात्येते। दाशृ दाने अस्माद् धातोः पचाद्यच् (३।१।१३४) दाशन्ति तस्मै इति दाशः । गोघ्न इति टक् प्रत्ययान्तो निपात्यते, गां-- दुग्धादिकं घ्नन्ति— × प्राप्नुवन्ति यस्मै स गोघ्नोऽतिथिः ।

भावार्थ— [दाशगोघ्नौ] दाश तथा गोघ्न कृदन्त शब्द [सम्प्रदाने] सम्प्रदान कारकमें निपातन किए जाते हैं। कृदन्त होनेसे कर्तरि कृत्से कर्तामें जो प्राप्त थे सम्प्रदानमें निपातन कर दिया है। दाशमें दाशृ धातुसे पचादि अच् सम्प्रदान कारकमें हुआ है तथा गोघ्नः में गोपूर्वक हन् धातु से टक् प्रत्यय निपातनसे हुआ है, जो कि प्रकृत सूत्रसे सम्प्रदानमें हुआ । हन्के ह को कुत्व हो हन्तेर्जि० (७।३।५४) से तथा उपधाका लोप गमहनजनखनघसां० (६।४।६८) से हुआ है ।

उदा०— दाशः (जिसके लिए दिया जाता है) । गोघ्नः (गौका विकार दूध आदि जिसके लिए प्राप्त किया जाता है, ऐसा अतिथि) । +

प्रो· रामदेवजी बी. ए., गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगडी हरिद्वार

' गोघ्न ' शब्द ' गो ' और ' हन् ' के योगसे बना है। ' गौ ' के अनेक अर्थ हैं यथा, वाणी, पृथिवी, जल, स्वर्ग वा विशेष सुख, माता, इन्द्रिय, नेत्र, सूर्य, चन्द्र । ' हन ' का अर्थ महर्षि पाणिनि ' हिंसा ' और ' गति ' बतलाते हैं। और ' गति ' के अर्थ हैं ज्ञान, गमन और प्राप्ति, अतः गोघ्नके निम्नलिखित अर्थ हो सकते हैं—

१. जिसके लिए जलकी प्राप्ति की गई हो अर्थात् जिसके लिए जलका प्रबन्ध किया गया हो ।

२. जिसके लिए सुखकी सामग्री प्राप्त की गई हो।

३. जिसका वाणीसे सत्कार किया गया हो ।

४. जिसकी ओर आंखें लगी हों ।

इन अर्थोंको साधारण बुद्धि भी स्वीकार कर सकती है, क्योंकि प्रायः सभी सभ्य देशोंमें जब कभी किसीके घर अतिथि आता है तो उसके स्वागतके लिए गृहपति घरसे बाहर आते हुए कुछ चलता है (गति) उससे प्रिय वचन (वाणी) बोलता है, फिर जल वा दुग्धादिसे उसका सत्कार करता है और यथासंभव उसके सुखके लिए अन्यान्य सामग्रियोंको भी प्रस्तुत करता है, यह जाननेके लिए कि प्रिय अतिथि इन सत्कारोंसे प्रसन्न होता है वा नहीं, गृहपतिकी आंखें भी उसकी ओर लगी रहती हैं। यदि कोई गृहपति दरिद्री भी हो तो वह भी अपने यहां आए अतिथिका सत्कार मीठे वचन और स्वच्छ जलसे अवश्य ही· करता है। जब उक्त सभी अर्थ ' गोघ्न ' शब्दके हो सकते हैं तो फिर न मालूम इस शब्दके अर्थ यूरोपीय विद्वान् इस प्रकारका क्यों करते हैं जो न केवल वेद, शास्त्र, लोकोक्ति, भारतीय मन आवेश हीके विरुद्ध है प्रत्युत जिसे साधारण बुद्धि भी स्वीकार नहीं कर सकती । ' ×

पौराणिक पं. दीनानाथजी शास्त्री, विद्याभूषण, प्रिन्सिपल सं. दि. महाविद्यालय, रामदल, दरीबाकलां, दिल्ली ६ लिखते हैं—

' इसके अतिरिक्त ' हन् ' धातुका ' गति ' अर्थ भी होता है, केवल ' हिंसा ' अर्थ नहीं । पाणिनीय धातु पाठमें, हन् हिंसागत्योः (अ. प. अ.) है। यहां ' हन् ' का गमन अर्थ भी

× यहां, हन् हिंसागत्योः, धातु पाठमें पढे होनेसे घ्नन्तिका अर्थ प्राप्त करना है, क्योंकि गतिके ज्ञान, गमन और प्राप्ति तीन अर्थ होते हैं । गौका अर्थ भी यहां निरुक्तके प्रमाणसे नि० ६।५ गौका विकार दूध या चमडा आदि है । [भाष्यकार]

+ अष्टाध्यायी भाष्य प्रथमावृत्ति १–३ अध्याय परिशिष्ट सहित पृष्ठ ६३५ प्रथम संस्करण दिसम्बर १९६४ ई० में मन्त्री श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट, गुरु बाजार, अमृतसर, (पंजाब) द्वारा प्रकाशित ।

× द्रष्टव्य, भारतवर्षका इतिहास (वैदिक तथा आर्ष पर्व), तृतीयावृत्ति, पृष्ठ १७५, १७६.

माना है केवल हिंसा नहीं। इसलिए वार्तिककारने भी 'हन्तेर्हिंसायां यङि घ्नीभावो वाच्यः' 'जेघ्नीयते' यह कहकर 'जंघन्यते' इत्यादिमें हिंसासे भिन्न गमन अर्थ भी माना है। यह अर्थ कहनेसे सिद्ध होता है कि हन् धातुका हिंसासे भिन्न अर्थ भी होता है।

एक अन्य विशेष ध्यान देनेकी यह बात है कि "वैदिक निघंटु" २।१४ में गत्यर्थक धातुओंमें 'हन्' धातु भी आया है। अन्य विशेषता यह है कि निघंटु २।१६ में वध अर्थवाले धातुओंमें 'हन्' का प्रयोग सर्वथा नहीं है। गति कर्मक धातुओंमें वहां 'हनति 'हन्ति' हन्तात्' २।१४ यह हन्के प्रयोग आए हैं' पर वधार्थक ३३ धातुओंमें हन् धातु का प्रयोग सर्वथा नहीं आया, उससे वेदमें 'गोघ्न' आदि शब्दोंमें वध अर्थ वैसे ही किया है। जब वेदमें भी नहीं' तब वेदांग × व्याकरण' कल्प आदिमें भी हनन अर्थ कैसे हो सकता है ? तब अर्थ हुआ गां हन्ति गच्छति अस्मै इति गोघ्नोऽतिथिः "अस्मै आतिथ्यार्थे दुग्धादिप्रापणार्थं गोपार्श्वे गच्छति" इस प्रकार अतिथि गोघ्न हुआ- उस अतिथिको दूध देनेके लिए गायके पास गमन करनेसे 'गोघ्न' शब्द बना।" ×

'उत्तररामचरित' आधुनिक नाटक है वेदके सामने नाटक प्रामाणिक नहीं हो सकता' क्योंकि—

"धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः"
(मनुस्मृति २।१३)

वेद द्वारा धर्मका निश्चय करें क्योंकि धर्माधर्मका निश्चय विना वेदके ठीक ठीक नहीं होता।

प्रामाणिक विद्वान् भी 'उत्तररामचरित' को प्रामाणिक नहीं मानते हैं और न अतिथिके लिए गोवध मानते हैं।

पं० दीनानाथजी शास्त्री पुनः लिखते हैं—

'यह कर्तव्य है–यह कर्तव्य है–उसमें शास्त्र ही प्रमाण होता है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' में लिखा है– 'तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ (१६।२४)। नाटक शास्त्र कोटिमें नहीं आ सकता तब उसका प्रामाण्य भी क्या हो। इसके अतिरिक्त उत्तररामचरितमें यद्यपि सीता रामचरित्र है' तथापि उसमें वाल्मीकि रामायणसे भिन्न बहुतसी बातें मनः कल्पित हैं। आत्रेयी आदि बहुतसे पात्र कल्पित बनाए गए हैं। उनका वेदान्त आदि वाल्मीकिसे पढना सब मनघडन्त जोडा गया है। वाल्मीकि रामायणमें किसीके सत्कारमें वत्सतरीका विशसन नहीं कहा। श्री वसिष्ठ ने विश्वामित्रका सत्कार फल फूलोंसे किया' न कि गायके विशसनसे।...

उत्तररामचरितकारको यह व्यवहार (वत्सतरी–विशसन) इष्ट नहीं बल्कि वैसे करानेवालेको व्याघ्र या वृक कहलवाकर उस अर्थका उपहास किया गया है। वसिष्ठको वहां वैसा पात्र बताकर वसिष्ठ स्मृतिके पहले बताए वचनको कइयोंके मतमें वैसे अर्थवाला सूचित किया गया है' पर वसिष्ठकी वैसी घटना न वाल्मीकि रामायणमें कहीं संकेतसे भी आई है' न ही वसिष्ठका वह अर्थ है।......

वस्तुतः यहां और रहस्य है' गायका दूध प्राय: अतिथि के कार्यमें लग जानेसे यह वत्सतरी (बछिया) के लिए नहीं बचा होगा' इसलिए वह बेचारी भूखसे चिलचिलाती होगी। यही 'वत्सतरी मडमडायिता' से संकेत मिलता है। सो आतिथ्यार्थ वत्सतरी विशसन यहां भी हो जाता है। श्री जनक ने क्षत्रिय होनेसे वा वानप्रस्थ होनेसे मुनिका गायका दूध आदि स्वीकार नहीं किया इसलिए वहां उसके लिए कहा है– 'वत्सतरी विसर्जिता' ॐ

अतः इन सभी उपर्युक्त प्रमाणोंके आधार पर श्री डी. एन. शास्त्रीका लेख व्यर्थ है।

× "श्रीसनातनधर्मालोक" (६) प्रथम संस्करण, पृष्ठ ३४८,३४९

ॐ वही, पृष्ठ ४४०, ४४१, ६४२